उपसंहार

प्रस्तुत शोध में हमने 'शिवमूर्ती' की कहानी तिरिया चरित्तर आधारित फिल्म का अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है । इस अध्ययन में हमने अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन को प्रस्तुत करने के लिए निम्न स्तरों पर अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन किया है जिसमें-

1. कथानक के आधार पर अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन

2. पात्रों के आधार पर अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन

3. भाषेतर प्रतीकों के माध्यम से अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन

4. फिल्म में संगीत के माध्यम से अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन

5. परिवेश के आधार पर अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन

1. कथानक के आधार पर अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन के दौरान हमने निम्नलिखित आधार पर अध्ययन किया

अ. फिल्मकार ने कहानी के किन दृश्यों को फिल्म में नहीं फिल्माया और उन्हें क्यों नहीं फिल्माया ?

आ. फिल्म के कथानक में कौन-कौन से दृश्य हैं जो कहानी में नहीं है ।

इ. फिल्म के कथानक की संप्रेषणीयता कहानी के कथानक की संप्रेषणीयता से भिन्न है या नहीं ।

2. पात्रों के आधार पर अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन करते हुए हमने यह देखने का प्रयास किया कि

अ. स्त्री पात्र.पुरुष पात्रों की संख्या और चरित्र चित्रण के आधार पर फिल्म और कहानी में क्या समानताएं, असमानताएं हैं ।

आ. स्त्री पात्रों, पुरुष पात्रों के मानसिक द्वंद्व को फिल्मकार ने किस रूप में दिखाया है ।

3. भाषेतर प्रतीकों के माध्यम से अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन के दौरान हमने फिल्म में दर्शाए गए उन दृश्यों को अध्ययन का आधार बनाया है जिन्हें फिल्मकार ने कथानक को अधिक संप्रेषणीय बनाने के लिए फिल्माया है जैसे : विमली के हाव भाव, ट्रक ड्राइवर के हाव भाव, पंचायत के चेहरे, ईंट भट्टे के दृश्य, मेले के गीत का दृश्य आदि।

4. परिवेश के आधार पर अंतरप्रतीकात्मक अध्ययन में हमने फिल्म में दिखाए गए ग्रामीण परिवेश, वेशभूषा, भाषाई परिवेश आदि को आधार बनाकर अध्ययन किया है ।

अत: इस शोध की उपलब्धियां निम्नलिखित रहीं

1. विमली के चरित्तर को कहानीकार जैसा दिखाना चाहता था फिल्मकार ने भी उसे वैसा दिखाने का प्रयास किया परंतु फिल्म में विमली उस रूप में नहीं आ पाई जिस रूप में वह कहानी में थी।

अ. कहानी में विमली एक निम्न वर्गीय मज़दूर स्त्री है जबकि फिल्म में उसकी साड़ी, रहन- सहन ,हाव भाव, चेहरा (मेकअप) आदि देखकर वह मध्यवर्गीय स्त्री अधिक लग रही है। निम्न वर्गीय वह नहीं लग रही यदि हम इसके कारण की बात करें तो फिल्मकार ने दर्शकों के सौन्दर्य बोध का अधिक ध्यान रखा है। यदि विमली के किरदार को किसी अन्य कलाकार के द्वारा निभाया जाता तो फिल्म अधिक संप्रेषणीय होती।

आ. फिल्म में ससुर के किरदार में नसीरुद्दीन शाह को जितना क्रूर दिखाया जाना था उसके चेहरे के हाव भाव से उतनी चालाकी और क्रूरता दिखाई नहीं दे रही है।

इ. ओमपुरी को प्रेमी के किरदार में दिखाया गया है जबकि फिल्म के किसी भी दृश्य में उसके चेहरे से विमली के प्रति आगढ़ प्रेम दिखाई नहीं देता है। अधिक उम्र के कारण भी ओमपुरी इस किरदार के लिए मिसफिट है। फिल्मकार ने जब भी ओमपुरी को दिखाया है भावहीन चेहरे के साथ जबकि बोलकर ओमपुरी ने अपने प्रेम की अभिव्यक्ति की है लेकिन फिल्म में दृश्य अधिक महत्वपूर्ण है।

ई. फिल्म में वातावरण और परिवेश कहानी की तरह हू- ब - हू है। उसमें वही दृश्य है कुआँ, गाँव, आदि के चूक यदि हुई है तो विमली के घर को बहुत जीर्ण-शीर्ण नहीं दिखाया गया।

उ. गीतों के माध्यम से फिल्मकार ने कई दृश्यों को फिल्माया है, जिसमें कुईसा मिस्त्री का चरित्र उभरकर सामने आया है साथ ही विमली की चंचलता और सामाजिक व्यवहार और पति प्रेम.समर्पण भी गीत और मेले के दृश्यों के माध्यम से फिल्माया गया है।अत: अंतत: हम कह सकते हैं कि फिल्म में कहानी और संवाद तो हु –ब –हु हैं वातावरण भी वही है लेकिन कहानी अपने पात्रों के मिसफिट होने के कारण उस तरह से दर्शक पर प्रभाव नहीं छोडती जिस तरह से कहानी अपना प्रभाव छोडती है। कहानीकार ने भी अपने साक्षात्कार में कहा है कि " इस कहानी पर मास्टरपीस फिल्म बनना अभी बाकी है "